।। षट दर्शण को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

प्रस्तावना

षटदर्शनी त्रिगुणीमाया के सुखोंको पूर्ण समझके उसकी चाहणा करते है। यह षटदर्शनी माया में काल है यह समझते ही नहीं और आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजजी ने काल के परे के वैराग्य में महासुख है,वहाँ काल नहीं है। वहाँ पहुँचनेवाले योगी,जंगम, फकीर,संन्यासी,ब्राम्हण यह सच्चे षटदर्शन है यह जगत को समझा रहे है। माया के षटदर्शनी,यह ५ इंद्रीय,२५ प्रकृती तथा ३ गुणों के सुखों के लिये अभी के माया के सुखों से ५,२५,३ को अलग रखकर तपाते और ऐसी साधना करते की हमे आगे यह सुख भरपूर मिलेंगे परंतु ये यह नहीं सोचते की इसमें काल है,इसमें सदा के लिए सुख नहीं है ८४ लाख योनि का आवागमन का दु:ख है। इसलिए ये सच्चे योगी,जंगम, संन्यासी,फकीर,पंडित,ब्राम्हण,जिंदा परमाण नहीं है।

।। अथ षट दर्शण को अंग लिखंते ।।

।। चोपाई ।।

जोगी सोइ जोग गत जाणे ।। घट मे आत्म देव पिछाणे ।।
सुखमण घाट पिये भर प्याला ।। अे निस मगन रहे मतवाला ।।१।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है, जोगी वही है,जो योग के विधि से याने गती से घट में आत्मदेव जानता है। आत्मदेव? परमात्मा, सतस्वरुप तथा इडा,पिंगळा,सुखमन के संगम के घाट पर ब्रम्हसुख के प्रेम के प्याले भर भर पिता है और रात-दिन ब्रम्हसुख में मगन होकर मतवाला रहता है।

जोगी वह नहीं जो माया के विधि से मतलब संखनाल के रास्ते से भृगुटी में माया के देवता को जानता।

।।१।।

कवित्त ।।

गेहे अेसो तत्त बात ।। जोग जोगी गत जाणे ।।
घट में आत्म देव ।। प्रीत सुं मांय पिछाणे ।।
सुखमण वाट घाट ज्याँ जावे ।। भर भर पिये पियाला ।।
अे निश ब्रम्ह रंग सो राता ।। मगन रेहत मत वाला ।।
उन मुन मुद्रा पेर ।। गिगन में नाद बजावे ।।
सो जोगी सुखराम ।। सुन्न में ध्यान लगावे ।।१।।

देह तत्तसार ब्रम्ह की बात पकड्कर तत्तसार ब्रम्ह को पाने की गती जानी है,वही जोगी है। घट में आत्मदेव याने आत्मा का देव मतलब हंस का देव प्रीत से घट में पहचानता है वही जोगी है। सुखमण के घाट पर याने त्रिगुटी में जहाँ गंगा,यमुना और सरस्वती का संगम का घाट है वहाँ ब्रम्हानंद याने सतस्वरुप के प्रेम से भर भर प्याले पिता है,वही जोगी है। जो रात–दिन ब्रम्ह रंग में रंगा हुआ है तथा मगन मस्त है,वही जोगी है। जो ब्रम्ह की उन्मुनी मुद्रा में याने अखंडित जो गिगन याने ही दसवेद्वार में जींग नाद ध्वनि बजा रहा है,वही जोगी है। जो सुन्न में मतलब दसवेद्वार में ध्यान लगाता है,वही जोगी है।

जोगी वह नहीं है जो गंगा,यमुना, सरस्वती के घाट पर देह से(शरीर से) प्याले भर–भर के पिता और रात–दिन पिय हुये वस्तु के नशे में मगन होकर मतवाला रहता है। जो ओअम याने माया की बात पकड्कर ओअम पाने की गती जानता वह सच्चा जोगी नहीं है और घट के बाहर माया के देवताको मन के हट से तथा तन के हट से पहचानता वह योगी नहीं है। गंगा, यमुना के घाट पर नशीली वस्तु के प्याले भर–भर के पिता वह जोगी नहीं है। जैसे,जो रात–दिन गांजा,भांग,चरस के नशे में रंगा है तथा मगन मस्त है वह जोगी नहीं है। जिसने कान में उन्मुनी मुद्रा पहनी है वह जोगी नहीं है। जो आकाश में शंख बजा के ध्वनि करता वह जोगी नहीं है। जो एकांत में किसी पहाडी पर ओअम याने माया का ध्यान करता वह जोगी नहीं है ।

।।२।।

जति जुग बिचार ।। पाँच पै माल करावे ।।
बावन अंछर सोझ ।। र रे सुं चित्त लगावे ।।
प्रेम मांड पटसाल ।। बेद को भेद उचारे ।।
चेला पाँच पचीस ।। तीन पर छ डी पसारे ।।
पिण्ड ब्रम्हण्ड कूं सोझ ले ।। आद पुरष ज्याँहा जाय ।।
सो जति सुखराम के ।। मन जीता तन मांय ।।२।।

जती जगत में उसीको समझना चाहिए जिसने पाँचो विषयो के मुल खतम कर दिए है(पैमाल) ५ विषयों के मूल निकल गए। ५२ अक्षरोंको खोजकर याने ५२ अक्षरों के ज्ञान खोजकर ५२ अक्षरों का ज्ञान जिसके आधार पर है ऐसा र याने ने:अंछर याने सतशब्द पर चित्त लगाता है वही जती है। जो प्रेम के पाठशाला में ५ इंद्रिय, २५ प्रकृती तथा ३ गुण इनको शिष्य बनाके इन शिष्यों को वेद का भेद याने ब्रम्हा का जो देवता है ऐसे सतस्वरुप देवता का ज्ञान सिखाता है। ब्रम्हा ने सतस्वरुप विज्ञान के आधार पर ही वेद उच्चारण किया है। जती वही है जो ५ इंद्रिय,२५ प्रकृति तथा ३ गुण जब माया के भ्रम में जाते है तब उनके उपर ज्ञान की छडी लगाता है। जो पिंड में ही ब्रम्हांड खोजता है और पिंड मे ही आदपुरुष जहाँ है ऐसे दसवेद्वार में जाता है वह जती है । जिसने शरीर में मन को हंस से सदा के लिए हटा दिया है वही जती है।

जती जगत में उसे नहीं समझना चाहिए जिसने मन के और तन के हट से पाँचो विषयों का नियंत्रण किया है याने वश में किया है। यह मन का तथा पिंड का हट सदा रहनेवाला नहीं है। यह पल पोहर बस में रखने की जबरदस्ती की विधि है । यह सहज में सदा के लिए वश में रखने की विधि नहीं है। इसलिए ऐसे जत रखनेवाले ये असली जती नहीं है। जगत का जती जैसे के तैसे है। कान,नाक,आँखे,(चमडी)त्वचा,जीभ इनको वश में करता है परंतु इनके मूल हंस के साथ है उन्हें हंस से अलग नहीं करता। जो ५२ अक्षरों के वेद शास्त्र,पुराण के ज्ञान में चित्त रखता है वह जती नहीं है और मन के हट के पाठशाला में ५ इंद्रियों का,२५ प्रकृति को तथा ३ गुणों को शिष्य बनाके विषय वासना कैसे बुरी है यह वेद के द्वारा सिखाता है वह जती नहीं है कारण,वेद का कर्ता ब्रम्हा यह स्वयम जती नहीं है। वह ५ इंद्रियों,२५ प्रकृति तथा ३ गुणों के विषय वासना का भोग करता है। जब २५ प्रकृति,तीन गुण तथा ५ इंद्रिय काबू से बाहर जाते तब इन तीनों पर तन के हट की छडी मारता है मतलब तन को बहुत सताता है ये जती नहीं है। खंड में मायावी देवता के धाम खोजता है और वह जहाँ है ऐसे जगह देह से जाता है वह जती नहीं है। जिसने हट से मन को पोहर,पल के लिए जीता है मन को पाँचो वासना में पोहर,पल के लिए जाने नहीं देता वह जती नहीं है।

सो सामी जुग जाण ।। तन में स्याम पिछाणे ।।
आया जहाँ चल जाय ।। आद घर बोत बखाणे ।।
धूनी ध्यान लगाय ।। भजन सो भीख उगावे ।।
करे सम्पा डा नीर ।। आण तिरवेणी न्हावे ।।
सो सामी सुखराम के ।। त्रिगुटी परे बताय ।।
शिव सगती संग छाड कर ।। मिले अगम घर जाय ।।३।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,संसार में सच्चा स्वामी याने संन्यासी उसीको जानो जिसने सब जगत का स्वामी याने यह परमात्मा शरीर में पहचाना है। जिस सतस्वरुप देश से आया था उस सतस्वरुप ब्रम्ह में जाता है और ऐसे आद घर को याने माया तथा होनकाल के आद घर का बहुत प्रकार से वर्णन करता है। जो आकाश, वायु, अग्नी, जल, पृथ्वी के परे की अखंडीत ध्वनि का ध्यान करता है वह स्वामी याने संन्यासी है। असली स्वामी वह है जो जगत से परमात्मा के भजन याने सुमिरन करने की जगत के लोगो से भीख मांगता है। जो देह में त्रिगुटी में गंगा,यमुना तथा सरस्वती के संगम में न्हाता है वह सच्चा स्वामी है। त्रिगुटी के परे शिवशक्ति याने ब्रम्ह और माया को छोड्कर सतस्वरुप के अगम घर में पहुँचा है वह असली स्वामी है। असली स्वामी याने उसके उपर कोई स्वामी नहीं रहता ऐसा काल के परे रहता।

जो तन में स्वामी याने परमात्मा नहीं खोजता वह स्वामी नहीं है । जो भृगुटी में जाता है और भृगुटी को आद घर समझ के बहुत बखान करता है वह स्वामी नहीं है। जो अग्नी की धुनी लगाता है और ओअम याने माया का ध्यान करता है वह स्वामी नहीं है। जो जगत में रोटी की भीख मांगता है वह स्वामी नहीं। जो धरती पर के गंगा,यमुना,सरस्वती के त्रिवेणी में न्हाता है वह स्वामी नहीं है। जो भृगुटी में है। वह ब्रम्ह और माया में ही है। उसका आवागमन, जन्मना मरणा मिटा नहीं है। वह असली स्वामी नहीं है और इस माया के स्वामी के उपर काल रहता ही है तो यह सच्चा स्वामी कैसे हुआ?

।।३।।

सो सन्यास बखाण ।। कुबद पर सार बजावे ।।
सरब कर्म कर नाश ।। जीत सुख माय समावे ।।
नेहचल रहे मन थीर ।। चित्त डोले नहिं कोई ।।
मुख अमृत कहे बेण ।। मुळक बिगसे मन सोई ।।
अनहद में रत्ता रहे ।। त्रिगुटी ध्यान चढाय ।।
सिन्यासी सुखरामजी ।। उलट आद घर जाय ।।४।।

सच्चा संन्यासी वह है जिसने होनकाल कुबुद्धी को विज्ञान तलवार से मारा है। जिसने तीनों कर्मो का नाश किया है। जो सतस्वरुप आनंदपद के सुख में समाया है। याने उसे वह सुख मिलनेवाला है और वह सतस्वरुप के पद के अनुभव ले रहा है।(समाधि) जिसका मन निश्चल है अस्थीर नहीं है मतलब जिसका हंस निश्चल है,मायावी मन के अस्थिरता में नहीं है। हंस का मन हंस के साथ का मन जिसका चित्त ५ वासना के सुखों में डोलता नहीं मतलब होनकाल के पाँच वासना के सुखों में न रहते हुए सतस्वरुप विज्ञान सुख में रहता। जिसके मुख में अमृत वाणी है याने अमरदेश की वाणी है। जिसका मन सदा प्रफुल्लीत रहता। त्रिगुटी में ध्यान चढाकर जो अनहद ध्वनि में रचामचा है वह सच्चा संन्यासी है। जिसने देह में बंकनाल के रास्ते से उलटकर आद घर पाया है वही संन्यासी है।

गुरु महाराज कहते है,यह सच्चा संन्यासी नहीं जिसने अपनी पत्नी को दूर किया,अपनी संसारी इच्छा का नाश किया। यह सभी मायावी अशुभ नरकीय कर्म से दूर रहता है परंतु त्रिगुणी मायावी शुभ कर्म करता है। मन शुभ कर्म में स्थिर रहता है इसका चित संसारी अशुभ वासनीक कर्म में जाने नहीं देता। मुखसे वेदों की बाणी बोलता है और आगे त्रिगुणी माया पाऊँगा याने माया के सुख पाऊँगा इस खुशी में सदा रहता है। यह भृगुटी का ध्यान करता है और वहाँ की ध्वनि सुनता है तथा आदघर याने भृगुटी में जाता है। गुरु महाराज कहते ,यह सच्चा संन्यासी नहीं है। यह नरक में नही पडेगा,परंतु इसका आवागमन नहीं छुटता,८४ लाख योनी के दु:ख नहीं छुटते,गर्भ नरक में पडना बंद नहीं होता। असली संन्यासी वह है जो,कभी भी इन दु:खों में नही पडता।

।।४।।

सो दर्वेश बखाण ।। दिल दुबध्या सब मेटे ।।
अे निश रटे रहीम ।। दिल आदम सो भेटे ।।
ताह चले फिर लोप ।। जाय पर लोक समावे ।।
अला आद अस्मान ।। तांहि मे सुरत लगावे ।।
उलट पलट सुलटा चढे ।। मन सुं सुरत मिलाय ।।
जन सुखिया दरवेश सो ।। उलट आद घर जाय ।।५।।

सच्चा फकीर वही है जो हंस के दिल की याने उर की दुबध्या मिटा देता है। हंस को काल के दु:ख की दुबध्या मिटा देता है। जो रात-दिन रहीम याने रामजी का रटन करता है मतलब ने:अंछर का रटन करता है। जो दिल आदम से भेट करता है याने होनकाल से चित्त-मन निकालकर जो आदम याने वह परमात्मा जो आदि से है उसमें निजमन लगाता है। और ३ लोक १४ भवन और ३ ब्रम्ह के १३ लोकों को लोपकर परलोक याने सतस्वरुप के देश में समाता है। अल्ला जो आदि से है,जो आसमान में मतलब दसवेद्वार में है उसमें सुरत लगाता है। जो मन और सुरत के आधार से संखनाल से पलटकर बंकनाल से उलटता है। और जिसने आदघर याने सतस्वरुप पाया है वही दरवेश याने फकीर है।

सच्चा फकीर वह नहीं है,जिसने अपने मन की दुविधा मेटी है याने कुटुंब परिवार तथा संसार के दु:खों से मन निकाल लिया है। तथा निस दिन मुख से त्रिगुणी माया के सुख के लिए रहिम का रटन कर रहा है। धरती लोक लोपकर स्वर्गादिक में जाता है। अस्मान याने आकाश में अल्ला आदम को याने परमात्मा में सुरत लगाता है। वो यह समझता है की,अल्ला,आदम याने आसमान में है धरती पर नहीं है। यह भृगुटी में मन,सुरत लगाता है तथा भृगुटी में चढाता है। यह सच्चा फकीर नहीं है।

।।५।।

सो जिन्दा परवाण ।। जीव ओ पत गत जाणे ।।
कहाँ आयो कहाँ जाय ।। जीव को मरम बखाणे ।।
दुख पावे संसार ।। समझ अपणे दिल लेवे ।।
तांते रहे उदास ।। चित्त साहिब मे देवे ।।
तीन तीस कूं लोपिया ।। दिया पिसण सब पाल ।।
जिन्दा सो सुखराम जी ।। करे गिगन में ख्याल ।।६।।

जिन्दा परवाण उसे ही जाणो जो जीव की उत्पत्ती और गती जानता है मतलब जीव कहाँसे आया, कहाँ गया ऐसा जीव का मरम बखाणता है। संसार काल का दु:ख पाता यह अपने दिल में समझता वह दु:ख से निकले इसके लिए उदास रहता। इस उदासी में साहेब में सदा चित्त रखता वही जिन्दा परवाण है। जिसने ३गुण २५ प्रकृती एवं ५ इंद्रीयो के वासनाओंको खतम कर दिया है और जिसने होनकाल के आगे के सतस्वरुप गगन का ख्याल किया वही जिन्दा परवाण है।

यह सच्चा जिन्दा परवाण नहीं है जो, जीवको मायावी दु:ख क्यों पड्ते? तथा कहाँ जानेपर त्रिगुणी मायावी सुख मिलेंगे इसका भरम जीव को बताता है। माया के दु:ख संसारी पाते वह अपने मन में समझ लेता है और उसके लिए उदास रहता है। इसलिए स्वर्गादिक में जाने से मायावी सुख मिलेंगे इसलिए देवताओं में स्वयंम चित देता है तथा संसार को भी देने लगाता है और तीन तीसको काल कर्म में जाने देता और असमान में साहेब है उसका खयाल नहीं करता है।

।।६।।

जंगम बंदे जिंग सेर ।। समसेर जगावे ।।
विण बरष ले हाथ ।। नार सुरती घर जावे ।।
मांगे शब्द रसाल ।। म्हो को चूर्ण कीजे ।।
खावंद पीव मिलाय ।। संग मेर होय लीजे ।।
तन नगरी के बीच मे ।। फेरी नित्त दिरावे ।।
सो जंगम सुखरामजी ।। सुंन मे जिंग बजावे ।।७।।

जंगम वही है जो जिंग शब्द की वंदना करता और जिंग शब्द की तलवार माया के ५ तत्व, २५ प्रकृती और तीन गुण इन तीनों पर चलाता। शब्द की विणा बरण बजाकर सुरत नारी के घर जाता है। लोगोसे शब्द की याने सतशब्द की(नव्ह की)रसाल मांगता। (रसाल याने नयी फसल आने पर जिसके यहाँ खेती नहीं वही दुसरों के खेतों में खाने के लिए जाते है। जैसे तरबुज,बेर)और मोह को याने माया ममता इनको खतम करता है वही सच्चा जंगम है और खावंद याने अपने आत्मा के पति परमात्मा को मिलने मेहरे जाता है। इस शरीररुपी नगर के अंदर नित्य फेरी दिलाता है। जो सुन्न में याने दसवेद्वार में जींग ध्वनि बजाता है वही जंगम है।

यह सच्चा जंगम नहीं जो, हाथ में घंटा रखते है और घर घर जाकर नाद करता है और नारियों से नई फसल आनेपर टरबूज,बेर,ककडी मांगता है। यह कुटुंब परिवार के मोह का चुर्ण करता है। नगर के बिच में नित्त फेरी लगाता है तथा घंटा नाद करता है यह सच्चा जंगम नहीं है।

।।७।।

शील साच संतोष ।। ग्यान बिग्यान बिचारे ।।
पर निन्दा पस्तात ।। ओर पर द्रोह निवारे ।।
रहे इक तन आस ।। पास काहु नहिं जावे ।।
मन से मन मिलाय ।। अगम की खबर ले आवे ।।
अे निस रहे उदास ।। जक्त सूं प्रीत न कोई ।।
सो ब्राम्हण सुखराम ।। ब्रम्ह रंग रत्ता सोई ।।८।।

आगे गुरु महाराज ब्राम्हण के बारे में कहते, सतस्वरुपी शिल रखता है। होनकाल के माया में नहीं जाता,साई पर विश्वास रखता है। साई पाने का संतोष रहता है। होनकाल के सुख चाहने के लिए असंतुष्ठता थोडी भी नहीं रहती और सतस्वरुप ज्ञान विज्ञान का विचार करता है। शिल–ब्रम्हचर्य का पालन करता। सांच–साई पर पूरा विश्वास रखता। संतोष–साई ने जैसे रखा उस में खुश रहता। दुजे की निंदा एवंम दुजेकी बात इधर उधर नहीं करता और दुजे का द्रोह करना छोड देता और एकान्त में रहता है और शुद्र कर्म के पास कभी नहीं जाता। अपने हंस के मन से साहेब के मनसे मिलकर अगम याने साहेब के देश की खबर लाता है तथा सदा रात–दिन साहेब के लिए उदास रहता है तथा जगत से मतलब ३ लोक १४ भवन के माया के सुखों से उदास रहता है। सतस्वरुप ब्रम्ह के रंग में रत्ता याने रंगा रहता है वह ब्राम्हण है।

जो,शीलवान रहते,विश्वास मायावी देवता ब्रम्हा,विष्णु, महादेव में रखते और मुझे स्वर्गादिक मिलेगा ऐसे संतोषी रहते है और वेद के ज्ञान का बिचार रखते है। पर निंदा तथा पर द्रोह करना छोड देता है। क्योंकि इससे नरक में जाता यह समझता। ब्रम्हा के देश में जाने के लिए उदास रहता है और इसकारण जगत से प्रीति नहीं करता गुरु महाराज कहते यह सच्चे ब्राम्हण नहीं है।

।।८।।

पिंडत पिंड प्रमोद ।। भूल ओढे नहिं जावे ।।
घर की घट मे चीज ।। ताय सुं चित्त लगावे ।।
सो पिंडत प्रवाण ।। बेद को भेद बिचारे ।।
छसे सेंस इकीस ।। ताय पर सुरत पसारे ।।
द्वादश आवे जाय ।। सुरत ले संग रमीजे ।।
सो पिंडत सुखराम ।। गिगन में बेद भणीजे ।।९।।

अब गुरु महाराज आगे कहते है,पंड्ति वही है जो,अपने पिंड को याने पाँच विषय इंद्रिय,तीन विषय गुण तथा २५ विषय प्रकृति को सतस्वरुप विज्ञान का उपदेश देता है। एवं भूलसे भी ५ विषय इंद्रियोंके ,३ विषय गुण के तथा २५ विषय प्रकृति के माया के ज्ञान में नहीं जाता है। और जगत के लोगों को उपदेश करने के लिए जगत में जाता है। घर की घट में चीज याने तन में ही साहेब है उससे घर बैठे चित लगाता वही पंड्ति प्रामाणिक है। जो वेद का भेद याने सतस्वरुप का विचार करता और २१,६०० श्वास के उपर सुरत फैलाकर सुरत को मायावी वासनाओं में न जाने देते हुए साहेब में रखता। सुरत के संग से बारा कमलोपर ६ पूरब के तथा ६ पश्चिम के कमलो में साहेब के साथ रमता ऐसा पंड्ति दसवेद्वार में सुक्ष्मवेद याने सतशब्द भजता याने दसवेद्वार में सतशब्द सुनता।

गुरु महाराज कहते,यह सच्चा पंडीत नहीं जो स्वयम के शरीर को उत्तम आचार का उपदेश देता है। निच कर्मोसे सदा दूर रहता,इनकी ओर कभी भी नहीं जाता। वेदोंकी श्रुतीयो का मनन करता है। २१,६०० श्वास ब्रम्हा ,विष्णु,महादेव में रखता है और जगत को वेद का ज्ञान सुनता है। अपना ज्यादा से ज्यादा वक्त उनकी सेवा में देता है। गुरु महाराज कहते यह सच्चा पंड्ति नही है। यह सच्चे कैसे नहीं?तो देखिए,उत्तम आचार माया है याने काल में ही है। वेद– माया है याने काल में है। ब्रम्हा, विष्णु,महादेव यह त्रिगुणी माया है, माया को काल खाता याने काल के मुख में ही है इसलिए यह सच्चा पंड्ति नहीं है। इसने अपने प्राण को जीव को काल से मुक्त नहीं किया।

।।९।।

ब्राम्हण सोई जाण ।। बोल अणभे मुख बाणी ।।
अंतर ब्रम्ह पिछाण ।। जाण समता घट आणी ।।
सील साच संतोष ।। पाँच पर सार बजावे ।।
पच्चिसा को मेट ।। तीन मे अेक रहावे ।।
चर अचर बिच ब्रम्ह कूं ।। देखे दिष्ट पसार ।।
ब्राम्हण सो सुखराम जी ।। अंतर हर दीदार ।।१०।।

ब्राम्हण उसीको जानो जो अणभै देशकी बाणी मुख से बोलता। अंतर में ब्रम्ह को जानता और सब घट में ब्रम्ह याने साहेब है,ऐसी समता लाता यानेही मुझमें ब्रम्ह है वैसे ही सबमें साहेब है ऐसी समता लाता। सभी एक समान मानता भेदभाव नहीं करता।
शिल:–एक पत्नीव्रत रहता तथा साहेब सिवा किसी होनकाल के मायावी देवता से प्रीत नहीं करता।
साच:–साई पर विश्वास रखता और संतोष:–साई जैसे रखता वैसेही रहता और पाँच विषय वासनाए, २५ वासनीक प्रकृतियाँ तथा वासनिक तमोगुण और वासनिक रजोगुण इनके उपर पोलादी तलवार चलाता याने ज्ञान से मारता और इन तीनोंमें से सतोगुण रखता। वह भी कौनसा जो वासना रहीत है और साहेब से मिलाने में मदत करता जैसे ६४ लक्षण सहनशिलता,दया वैगेरे और इस सतोगुण को साहेब के ओर लगाकर चित्त साहेब की ओर मजबूत करता।
चल–अचल याने चलनेवाले प्राणी तथा न चलनेवाले प्राणी पेड,पत्थर,पहाड वैगेरे सब में ब्रम्ह दृष्टि फैलाता और सब में ब्रम्ह देखता(परमात्मा)। जो हर याने साहेब के दर्शन हंस के अंतर में करता वह ब्राम्हण है और ऐसा ब्राम्हण ही अमरलोक में जायेगा।

यह सच्चा ब्राम्हण नहीं है जो ,वेद,शास्त्र,पुराण का ज्ञान मुख से बोलता है और अंतर में ब्रम्हा को पहचानता है। हमेशा शुभ कर्म करता है और अशुभ कर्म में चित नहीं देता। यह शील रखता और मायावी देवताओं पर विश्वास रखता और आगे स्वर्गादिक में जाऊँगा यह संतोष पालता और बिना अनुभव से मन से चर अचर में ब्रम्ह है यह सोचता है। लेकिन तन के अंदर ब्रम्ह याने परमात्मा को नहीं जानता है वह असली ब्राम्हण नहीं है ।

।।१०।।

ब्रम्ह अगन के मांय ।। घेर पांचु बिष जारे ।।
जुग सुं रहे उदास ।। जगत की प्रीत निवारे ।।
तन मन सुरत मिलाय ।। खण्ड सो पिण्ड में देखे ।।
च्यार बेद को जीव ।। भेद अतंर में पेखे ।।
मिले ब्रम्ह सुं जाय ।। ब्रम्ह सुं करे बिलासा ।।
सो ब्राम्हण सुखराम ।। द्वार दसवे घर बासा ।।११।।

आगे गुरु महाराज कहते,ब्रम्ह अग्नी में पाँचो विषयोंको घेर के जला देता है याने विज्ञान वैराग्य से पांचो वासनाओंको खतम करता है। जगत याने होनकाली त्रिगुणीमाया से उदास रहता एवं होनकाली मायावी सुखों में प्रिति नहीं रखता। तन,मन,सुरत इन सभी को पिंड में खंड–ब्रम्हंड खोजने को लगाता और ४ वेद का जीव याने सुक्ष्मवेद का भेद हंस के अंतर में देखता वही ब्राम्हण है। तथा सतस्वरुप ब्रम्ह से मिलता और उस ब्रम्ह में विलास करता ऐसे ब्राम्हण ने दसवेद्वार में याने अगम में याने सतस्वरुप में घर किया है ऐसा समझो याने वह काल के परे हो गया है।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,यह सच्चा ब्राम्हण नहीं जो मन और तन का हट करके ५ विषयोंको तपाता है। तन,मन तथा सुरत त्रिगुणी माया के देवताओं में रखता है । चार वेद के ज्ञान को अंतर में धारण करता है । त्रिगुणी देवी–देवताके मंदिर में वास करता है तथा त्रिगुणी देवताओंकी सेवा करता है।

।।११।।

गायत्री पढ ग्यान ।। प्रीत प्रमोद बतावे ।।
क्रिया काम समाय ।। ब्रम्ह अंतर लिव लावे ।।
गीता ग्रंथ उचार ।। मन कूं भेव बताया ।।
पूजे आतम राम ।। दिल में देव जगाया ।।
ब्रम्ह देख सब मांय ।। राग सो दोष निवारे ।।
सो ब्राम्हण सुखराम ।। तप ओ नाँव उचारे ।।१२।।

केवल की गायत्री याने सतशब्द जपता और साहेब से प्रीति करना यह स्वयं के हंस को तथा जगत को उपदेश देता तथा सतस्वरुपी ब्रम्ह में हंस के अंतर से लीव रखना यही क्रिया काम धारण करता। सत विज्ञान की गीता ग्रंथ का उच्चारण करता और अपने हंस के मन को सतस्वरुप का भेद बताता। आत्मा के राम को याने सतस्वरुप को पुजता और उस रामजी को हंस के उर में याने दिल में जागृत करता। सब जगत में चल अचल में सतस्वरुप ब्रम्ह देखता। ज्ञान से सभी में सतस्वरुप ब्रम्ह है फिर किसीसे नाराज क्यों रहना तथा किसीका दोष क्यों निकालना यह सोचकर राग,दोष भावना खतंम कर देता वही ब्राम्हण है। जो रामनाम का उच्चारण याने सुमिरन करता वही ब्राम्हण है।

जगत में ब्राम्हण गायत्री बाचता है। गायत्री ब्रम्हा ने बनाई है। (ब्रम्हा माया है यह सतस्वरुप ब्रम्ह नहीं है)स्वयम गायत्री पढता और जगत के लोगो को वेद की क्रिया कर्म करने लगाता। खुद के मन में ब्रम्हा इस माया की लीव लगाता है। तथा ब्रम्हा को पुजता और मन में ब्रम्हा को सबसे बडा देव करके समझ लाता। यह ब्राम्हण जगत में कहलाएँ जाता परंतु यह सच्चा ब्राम्हण नहीं है। क्यों की इसका आवागमन मिटा नहीं है। यह ८४ के फेरे में फिर आयेगा। सभी जगत से राग, दोष नहीं रखता।

।।१२।।

पिंडत अे अेनाण ।। खंड सो पिंड मे जोवे ।।
आसा त्रस्ना मेट ।। लोभ तज न्यारा होवे ।।
सील साच असनान ।। जुगत की क्रिया सोई ।।
जीमे सास उसास ।। आन मुख कहे न कोई ।।
आठ पोहर हर चरचा करे ।। तीन तीस प्रमोद ।।
सो पिंडत सुखराम जी ।। तत्त गहे पिंड सोद ।।१३।।

पंडित की निशाणी क्या है तो,जो खंड एवं ब्रम्हंड पिंड में ही देखता और आशा,तृष्णा लोभ मिटाकर इस होनकाली माया से न्यारा याने अलग हो गया है। आशा– आगे इंद्र बनने की। तृष्णा– आगे राजा बनने की। लोभ– जगत के सुखों का लोभ खतम हो गया है। जो शिल और सांच का स्नान करता याने शिल और सांच साहेब से रखता। सदाही साहेब के प्रति शीलवान रहता और सदाही मालिक पर विश्वास रखता और जग की क्रिया सब छोड देता। श्वासोश्वास में परमात्मा के नाम का याने सतशब्द का रटन करता यही भोजन करना है और दुसरे कोई भी होनकाली, मायावी देवता का नाम मुख से नहीं लेता याने उनका स्मरण नहीं करता और रात–दिन, आठोप्रहर सिर्फ रामजी की चर्चा करता याने सतस्वरुप की बातों में ही अपना समय व्यतित करता।(ज्ञान सुनना,ध्यान करना,कराना) और तीन विकारी गुण,२५ विकारी प्रकृतियाँ और ५ विकारी इंद्रिय इन्हें सतस्वरुप ज्ञान,विज्ञान से उपदेश देता है। और साहेब में चित्त लगाता है। अपना पुरा शरीर खोजकर याने पुरब के ६ और पश्चिम के ६ कमलो का छेदन करके तत्त ग्रहण करता है याने सतस्वरुप साई को देह में ही प्राप्त करता है।

गुरु महाराज कहते है,यह सच्चा पंडित नहीं जो,पंडित त्रिगुणी देवता के मुर्तियों को ९ खंड में खोजता है तथा उनकी सेवा करता है। आठ पोहर ब्रम्हा, विष्णु,महादेव की चर्चा करता है तथा तीन तीस को नरकीय कर्म करने नहीं देता और उन तीन तीस को मायावी शुभ कर्म में लगाता है और इस जन्म में शरीर के मायावी सुखों की आशा को तथा तृष्णा को मिटाता एवं संतोषी रहता और उसके पास जितना कुछ है उसके परे का लोभ नहीं रहता परंतु शरीर छुटने के बाद स्वर्गादिक का सुख मिले इसकी आशा तृष्णा तथा लोभ वृत्ती रहती मतलब उसकी हर एक क्रिया आगे के त्रिगुणी मायावी सुखों की रहती इसलिए यह सच्चा ब्राम्हण नहीं है और देखिए,इस जन्म में शील रखता परंतु आगे के जन्म में पाँचो विषयोंके सुख मिले यह चाहता। भोजन करता तब मुख से मायावी देवताओं के सिवा निच शब्द नहीं बोलता। आठोप्रहर त्रिगुणी मायावी देवता ब्रम्हा,विष्णु, महादेव की चर्चा करता एवं वेद के आधार पर ५ वासना की इंद्रिय २५ प्रकृति एवं ३ गुणों को काबु में रखता। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,यह सच्चा पंडित नहीं है।

कुंडल्या ||

केई जनम सुभ कर्म करे || प्रगटे भक्त आँकूर ||
ता पीछे केइ जनम लग || भजन करे भरपूर ||
भजन करे भरपूर || ग्यान घट में जब होई ||
केर्ह जनम गेहे ग्यान || तबे अणभे कहे कोई ||
सुखराम दास अणभे परे || केइ बरस लिव ध्यान ||
ता आंगे परा भक्त हे || कोई पावे संत सुजान ||१४||

कई जन्म लग शुभ कर्म करेगा तब भक्ति का अंकुर निपजेगा। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,जगत में शुभ कर्म दो प्रकार के रहते है:–१)त्रिगुणी माया के २) सतस्वरुप के –जगत त्रिगुणी माया के शुभ कर्म को ही जानता। इस त्रिगुणी माया के शुभ कर्म करने से परमात्मा के भक्ति का अंकुर नहीं निपजता। बल्की माया जो हंस के साथ थी वह और गाढी होती। परमात्मा के शुभ कर्म करने पर ही केवल भक्ति का अंकुर निपजता यह कर्म २० भंगवतो के साथ घड्ते है। केवल भक्ति के अंकुर निपजने पर कैवल्य भक्ति भरपूर करता तब सतस्वरुप का ज्ञान घट में आता। हंस को माया क्या और सतस्वरुप क्या इसका फरक समझने लगता। ऐसा कई जन्म ज्ञान में रहता तब अणभै ज्ञान याने ने:अंछ्र घट में प्रगटता। उससे कई बरस तक लीव लगाता तब परास्थिती प्राप्त होती। ऐसी पराभक्ति कोई सुजान संत ही पाता है। सभी जगत के लोग नहीं पाते। यह पुरा समझता नहीं कारण अभी तो पल–पोहर में दसवेद्वार खूल रहा है। परास्थिती हो रही है। जैसे हम,एक उदा.देखेगे

जैसे अमीर घर में एखादा दत्तक आता तब उसे धन सहज मिल जाता तो उसे धन कमाई करने में लगनेवाला परिश्रम और समय नहीं समझता वह धन सहज मिल जाता ऐसेही समझता है। ऐसेही हमारी आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज के कृपा से परास्थिती सहज हो जाती इसकारण बिना सत्ता के समय इतना कई जनम लग शुभ कर्म करेगा,भजन भरपूर करेगा और कई जनम ज्ञान में रहेगा,आगे अणभय बाणी बोलेगा। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,अणभय बाणी बोलते आने के पश्चात कई बरस लीव लगाएगा तब पराभक्ति प्रगट होगी। वह किसी सुजान (जानकार)संत को ही मिलेगी। ||१४||

कवत्त ||

भांग तमाखु छाड || ग्यान हिरदे उर ल्यावे ||
कन्या को द्रब लेन || ताय की सोगन खावे ||

भगत रीत घट धार ।। भजन निर बंधन कीजे ।।
ब्रम्ह रिष की चाल ।। सोझ सारी बिध लीजे ।।
ब्राम्हण सब ही सांभळो ।। जन सुखदेव कहे आण ।।
निष्ट कर्म सब छाड के ।। बोले इम्रत बाण ।।१५।।

आगे गुरु महाराज कहते है,भांग तंबाकु छोड्कर अपने हृदय में याने हंस के उर में सतस्वरुप ज्ञान विज्ञान लायेगा मतलब धारण करेगा और अपनी कन्या का धन ना लेने की सौगंध खायेंगा। भगत की याने सतस्वरुप के संत की रीत अपने घट में धारण करेगा,अपनायेगा और भजन निष्काम किजीए याने होनकाल के मायावी सुखों के लिए स्मरण ना करते हुए होनकाल से निकलने के लिए भजन किजीए। ब्रम्ह ऋषी याने जो सतस्वरुपी संत है उनकी तरह से रहो। वह जैसे रहते वैसे रहे उनकी तरह साहेब से जुडो। उनकी सारी विधि खोजकर देख लो और उसी तरह रहो,क्योंकी वैसे रहोगे तो ही वह परमात्मा मिलेगा। गुरु महाराज सभी ब्राम्हणों को कहते है, तुम सभी निष्ट याने बुरे कर्म छोड्कर अमृत जैसी मिठी बोली बोलो याने होनकाल छोड्कर सतस्वरुप से जुडो,सतस्वरुप का स्मरण करो। यह रीत धारण करके तुम संभल जाओ। ऐसा गुरु महाराज बोले।

गुझ्गुडी सो गो हत्या,ब्रम्ह हत्या नासका(तपकीर) मुखचाब्या सो गोत्र हत्या, कहे पुत्र व्यास का(सुकदेव)

राखे व्रत एकादशी ,
करे अनका त्याग।
भांग तंबाखु ना तजे,
वाको बडो अभाग।

।।१५।।

साखी ।।

अहुँ भाव लालच तजो ।। तजो निष्ट सब बाण ।।
साच शबद सुखराम के ।। समता कूं घट आण ।। १ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,अहंभाव याने मैंपना,बड्प्पन अहंकार और लालच(क्यों,तो यह होनकाल के माया में रखनेवाली चिजे है और इससे जीव को बहुत प्रकार के दु:ख पड्ते)छोड दो और नेष्ट याने बुरी बोली बोलना छोड दो और

सांच यानी सच्चा शब्द मतलब सतशब्द और समता को घट में लाओ ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।१।।

दुबध्या कर हम देखिया ।। जब दु:ख हूवा लार ।।
समता कर सुखराम के ।। देखत सुख अपार ।। २ ।।

मैंने जब दुविधा करके देखा तो दुविधा के साथ दु:ख आ गया और जब समता करके देखा तो अपार सुख हुआ। ।।२।।

कूड कपट मन काम में ।। जिण घट भजन न होय ।।
जे करहे सुखराम के ।। लोग देखावो जोय ।। ३ ।।

जब तक झूठ में ही लगा रहता है तब तक उसके घट से याने हंस से भजन नहीं होता है। जिसके मन में कपट तथा झूठ तथा काम वासना है,उस घट याने हंस से भजन नहीं होता और यदि वह भजन भी कर रहा होगा लेकीन उसका मन झूठ तथा कुड कपट से भरा होगा तो यह भजन करना सिर्फ दिखावा है। क्यों कि वह भजन याने स्मरण कर ही नहीं पाता देखनेवाले लोग कहेंगे वह स्मरण भजन कर रहा है परंतु असल में वह भजन नहीं है,वह दिखावा कहलाता।(बिना प्रीति और प्रेम के भजन नहीं होता)।।३।।

ग्यान सीख अडबी करे ।। सो मूरख भर पेट ।।
वा नर कूं सुखराम के ।। सपने हुँ मत भेट ।। ४ ।।

जो मायावी ज्ञान सीखकर सतस्वरुपी संत के साथ अड्वी करता याने अड्ता,वाद विवाद करता वह भर पेट मुर्ख है याने उसकी तरह मुर्ख कोई नहीं। क्यो कि,वे जिस ज्ञान से अमरसुख,सदा के लिए सुख मिलता ..... ऐसे ज्ञान से वह अड्ता तो इससे बडा मुर्ख कौन होगा। ऐसे मुर्ख मनुष्य से गुरु महाराज कहते,सपने में भी भेट मत करो याने ऐसे मनुष्य से दूर ही रहो इससे चर्चा मत करो ।।४।।

ग्यान सकळ कूं दीजिये ।। अड नहि कीजे कोय ।।
मंतर तो सुखराम के ।। दीजे जागाँ जोय ।। ५ ।।

गुरु महाराज आगे कहते,सतस्वरुप ज्ञान तो सभी को दिजीए जब तक उसके सारे भ्रम ना निकल जाए तब तक। लेकिन किसीसे अड्कर मत रहो याने वाद विवाद मत करो परंतु मंत्र याने भेद तो आप जगह देखकर याने पात्र व्यक्ति देखकर ही दिजीए। जैसे, वह व्यसनाधिन ना हो,वह सतस्वरुप के मंत्र को याने भेद को पात्र रहना चाहिए ।।५।।

पन्नोति सो पच गई ।। ग्रेह गया सब हार ।।
उसभ सेंग सुखराम के ।। गया भ्रम की लार ।। ६ ।।

शनी की साढेसाती तीस वर्ष में आती है। उसे मारवाडी में पन्नोती कहते है। यह

पन्नोती पच जाती है परंतु यह पन्नोती से संत को कुछ भी नुकसान कष्ट नहीं होता याने उसे कुछ भी फर्क नहीं पडता और सभी अपशकून,अशुभ बातें सब हमारे भ्रम के साथ चले गए। यह पन्नोती किसके द्वारा हंस को तकलीफ देती तो ५ आत्मा के द्वारा लेकीन अब इस हंस के ५ आत्मा और मन तो निकल गये है। यह पन्नोती उसका क्या बिगाड सकेगी? ।।६।।

।। इति षट दर्शण को अंग संपूरण ।।